कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 3976686

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	
2	5	20	
3	10	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	3	योग	55½
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3½	56	fifty six
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर ______

संकेतांक 3 6 1 5 0

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय कृषि जीव विज्ञान

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 28-02-26

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3)कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		" Seaction-A "
18×½ = 9	(1.)	बहुविकल्पी प्रश्न :-
	(i)	(अ) :- कानपुर
	(ii)	(ब) :- भारत
	(iii)	(द) :- उपरोक्त सभी
	(iv)	(अ) :- मार्टिन गेलर्ट
	(v)	(अ) :- सरसों का मोयला
	(vi)	(द) :- खपरा भृंग
	(vii)	(अ) :- मेलाथियान
	(viii)	(द) :- उपरोक्त सभी
	(ix)	(स) :- लाइकेन
	(x)	(अ) :- टी. ओ. डाइनर
	(xi)	(ब) :- सरसों का सफेद रोली

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(xii)	(अ) :- भिण्डी
	(xiii)	(स) :- प्लेक्टस
	(xiv)	(अ) :- घोंघा
	(xv)	(द) :- तीन
	(xvi)	(ब) :- नम त्वचा द्वारा
	(xvii)	(द) :- उपरोक्त सभी
	(xviii)	(ब) :- मछली पालन
	(2)	रिक्त स्थानों की पूर्ति :-
10×½	(i)	नयी दिल्ली
5	(ii)	पूसा जय किसान (बायो-902)
	(iii)	क्रैंक डस्टर (पंखा वाला डस्टर)
	(iv)	काइलोडी

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(v)	इलाहाबाद
	(vi)	2.5 %
	(vii)	0.4-5mm
	(viii)	श्वसन
	(ix)	काटने एवं चबाने वाले (आदिम प्रकार)
	(x)	28
	(3)	**अतिलघुत्तात्मक प्रश्न :-**
10X1 = 10	(i)	निल्सन एहिल (1908)
	(ii)	लाइसीन नामक एमीनो अम्ल वाले प्रोटीन को मक्का में स्थानांतरित म कर ट्रांसजेनिक मक्का तैयार की गयी।
	(iii)	T.M.V. (टोबेको मोजेक वायरस)
	(iv)	B.T. (बैसिलस थुरेन्जियसिस)
	(v)	सफेद लट :- होलोट्रिकिया कॉन्सेनगुनिया

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(vi)	एबामेक्टिन (बरुथीनाशी)
	(vii)	(a) अगेती पत्ती धब्बा :- सर्कोस्पोरा अरेकिडिकोला
		(b) पछेती पत्ती धब्बा :- सर्कोस्पोरा परसोनेटम
	(viii)	0.2 mm (पेराटायलेंकस)
	(ix)	11 वें अण्ड में
	(x)	महाशीर = टोर-टोर

"Seaction- B"

* लघुत्तरात्मक प्रश्न :-

(4.) वाहक (PBR 322) का चित्र :-

(12)

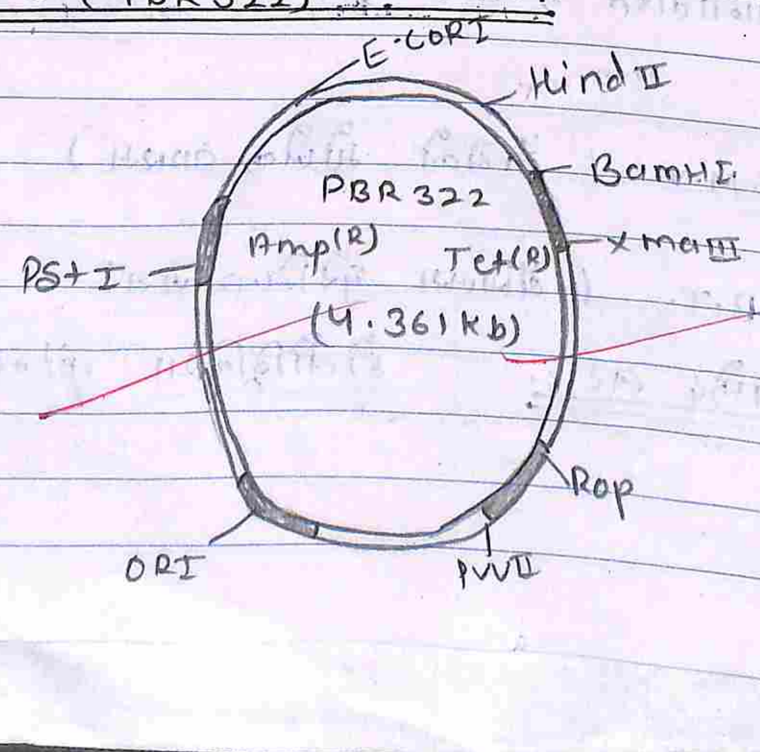

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(5) पादप पुरस्थापन एवं प्रकार :-

12

* पादप पुर:स्थापन :- किसी पादप को एक स्थान से दूसरे ऐसे स्थान पर ले जाना जहाँ वह पहले से नहीं है। पादप पुर:स्थापन कहलाता है।

* प्रकार :-

(a) प्राथमिक पादप पुर:स्थापन :- किसी पादप किस्म को सीधे ही खेत में उगाना प्राथमिक पादप पुर:स्थापन कहलाता है।

(b) द्वितीयक पादप पुर: स्थापन :- किसी पादप किस्म को नयी किस्म के रूप में विमोचित करने के पश्चात् खेत में उगाना द्वितीयक पादप पुर:स्थापन कहलाता है।

(6) चना के फली छेदक कीट का जीवन - चक्र :-

12

चने के फली छेदक कीट में पूर्ण कायांतरण पाया जाता है। इसके जीवन में अण्डा, लार्वा, कोष, प्यूपा व्यस्क चारो अवस्थाएं होती है। व्यस्क प्रकाश की ओर आकर्षित होते हैं। एवं मैथुन क्रिया करते है। मादा द्वारा पत्तियो पर अण्डे दिये जाते हैं। अण्डो से लार्वा का निर्माण होता है जो फलियो में घुसकर पोषण प्राप्त

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करता है। एवं 13-20 दिन में पूर्ण विकसित लार्वा में परिवर्तित होकर कोष से व्यस्क में बदलता है।

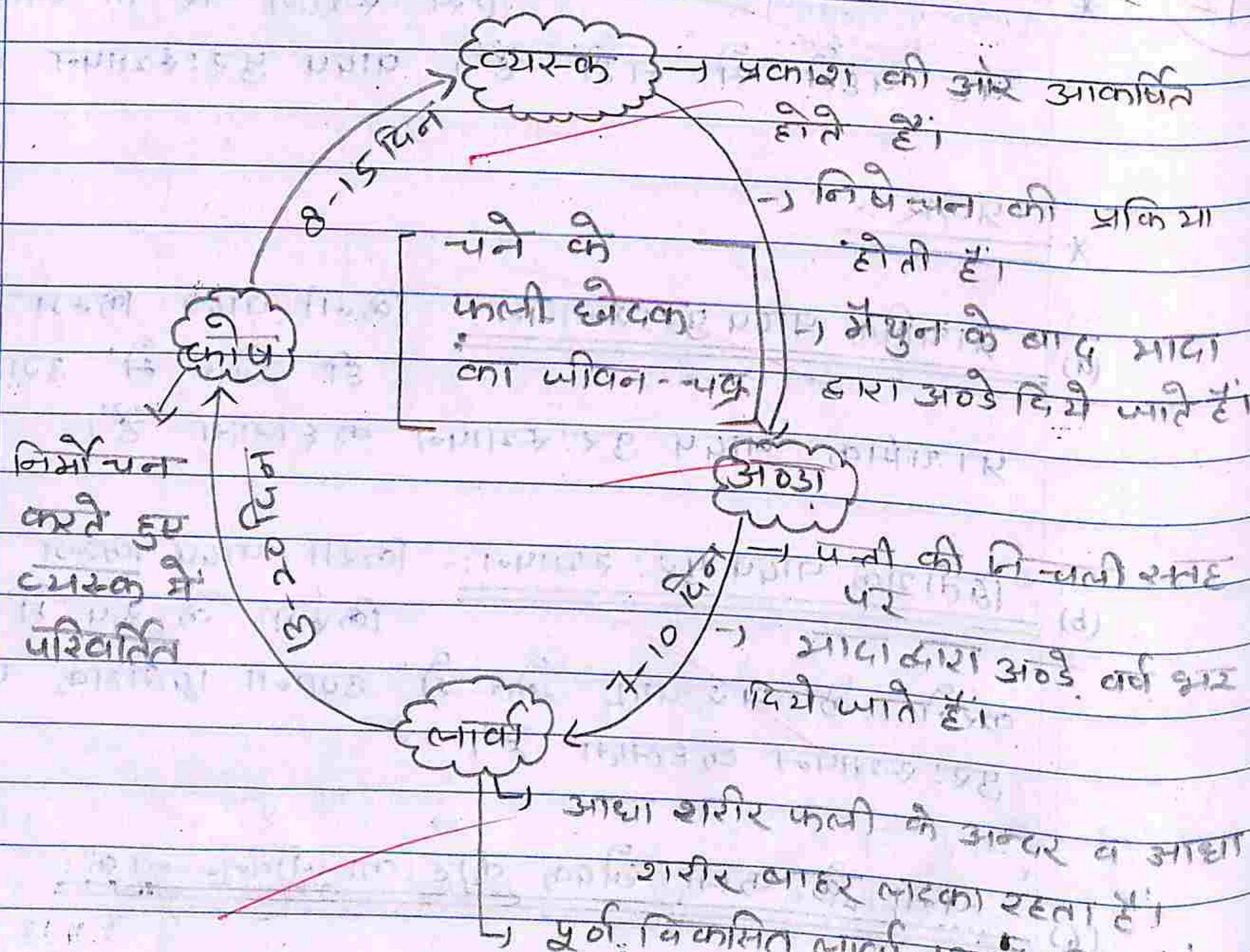

(7) **गेहुं के तना छेदक का प्रबंधन:-**

(1) **शस्य प्रबंधन:-** (1) मृत गोभ वाले पादप को उखाड़कर नष्ट कर दें।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) खरपतवारों को नष्ट कर देना चाहिए।

(iii) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करवानी चाहिए। जिससे कीट उच्च तापमान के कारण नष्ट हो जाये।

(2) जैविक प्रबंधन :-

(i) ब्रेकोनकिलोनिस या ब्रेकोनविलेकी अण्ड परजीव्याभ का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) ट्राइकोग्रामा (परजीवीकीट) का प्रयोग करें।

(3) रासा. प्रबंधन :-

(i) मैलाथियान 5% चूर्ण या क्लोरोपायरीफॉस 1.5% का 20-25 kg/ha. लार्वा के निकलते समय करें।

(ii) क्युनॉलफॉस 20 E.C. 1.5 ml/Ltr. को पानी में घोलकर पौधो पर छिड़काव करें।

(4) हस्तचलित नैपसैक स्प्रेयर का चित्र :-

12

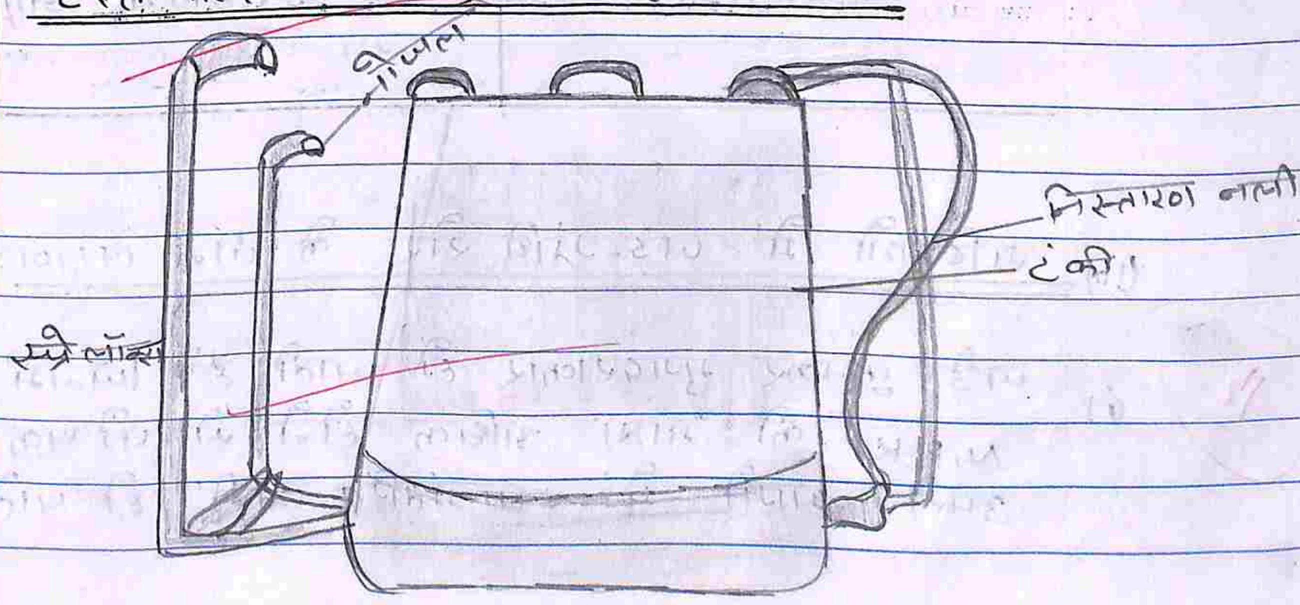

(नैपसैक स्प्रेयर)

BSER-18/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(9) कवक एवं जीवाणु मे अन्तर :-

12

	कवक	जीवाणु
1.	कवक मे युकेरियोटिक कोशिका पायी जाती हैं।	जीवाणु में प्रोकेरियोटिक कोशिका पायी जाती हैं।
2.	इसमे पर्णहरित का पूर्णतया अभाव होता हैं।	सायनोबॅक्टीरिया मे पर्णहरित पाया जाता हैं।
3.	कोशिका भित्ति काइटिन या सेल्युलोज की बनी जाती हैं।	कोशिका भित्ति पेप्टीडोग्लाइकेन की बनी पायी जाती हैं।
4.	इनमे पट पाये जाते हैं।	इनमे पट नहीं होते हैं।
5.	कशाभिका अनु. होती हैं	कशाभिका उप. होती हैं।
6.	प्लाज्मिड नहीं पाया जाता हैं।	प्लाज्मिड पाया जाता हैं।
7.	केन्द्रक सुसंगठित होता हैं।	केन्द्रक सुसंगठित नहीं होता हैं।
8.	Ex:- एल्ब्युगो, एरीसाइफी पक्सिनीया	Ex:- क्लेबीबॅक्टर, जॅन्थोमोनास इरविनिया आदि।

1

(10) सब्जियो में जड-ग्रंथि रोग के तीन लक्षण :-

12

(i) जडे फूलकर मुगदराकार हो जाती हैं। जिनमें N, P, K की मात्रा अधिक होने से पोषक पदार्थ उपरी भागो में स्थानांतरित नहीं हो पाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) रोग का प्रकोप सिंचाई एवं जुताई की दिशा में बढ़ता है।

(3) कंदो में गाँठे बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त पड़-छिशाखन कुंचित मुलाभ कंद एवं फलियों पर फुंसियाँ बन जाती हैं।

(11.) **गेहूँ के मौल्या रोग के तीन लक्षण:-**

1½

(1) इस रोग में रोगकारक खेत में असमान रूप से बिखरा होता है। एवं बंदर की उछाल की तरह होने के कारण मौल्या रोग कहते हैं।

BSER-18/2026

(2) पौधे की पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं। तना मृदा के पास से फुला हुआ दिखाई देता है।

(3) उग्र संक्रमण में पौधे में बालियाँ बहुत कम बनती हैं। एवं बालियो में दाने नहीं बनते हैं।

(12.) **केंचुए का कृषि में महत्व:-**

1½

(i) **प्रलोभक के रूप में:-** विश्वभर में केंचुए का प्रयोग मछली पकड़ने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त मेंढ़क, छिपकली एवं पक्षी भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) जैविक खाद के निर्माण मे :- केंचुए द्वारा गोबर की खाद को वर्मीकम्पोस्ट मे परिवर्तित किया जाता है, जिसमें N, P, K की मात्रा अधिक होती है, वर्तमान मे ड्रेटीटीटहोरस व जीओफेगस प्रजाति का प्रयोग जैविक खाद के निर्माण मे करते है,

(3) मृदा सुधारक के रूप मे :- केंचुए भोजन की तलाश मे मृदा में बिल बना देते है। जिससे वायुसंचार एवं मृदा की जलधारण क्षमता मे वृद्धि होती है,

(13) मत्स्य पालन के तीन महत्व :-

(i) भोजन के रूप मे :- मछली के मांस को पूर्ण आहार माना जाता है, जिसमें सभी एमीनो अम्ल एवं विटामिन पर्याप्त मात्रा मे होते है, ~~तेल मे 5.5g~~ 5.5gm तेल प्राप्त होता है,

(ii) आय का स्त्रोत :- तालाबो मे मत्स्य पालन करना आय का एक अतिरिक्त स्त्रोत है, जिससे किसान की आर्थिक दशा मे सुधार होता है,

(iii) मत्स्य खाद (मछली की खाद) :- तेल निकालने के पश्चात बचे कचरे का उपयोग,

12

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सान्द्रित जीवांश खाद के रूप में किया जाता हैं।

"Seaction-c"

* दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न:-

(14) टिड्डे का वैज्ञानिक नाम, क्षति, महत्व तथा प्रबंधन का वर्णन:-

3

* वैज्ञानिक नाम:- सिस्टोसर्का स्पी. (ग्रिगैरिया)
गण:- आर्थोप्टेरा

* क्षति:-

(i) टिड्डा आक, धतुरा, नीम, जामुन, शीशम आदि को छोड़कर सम्पूर्ण वनस्पति को सम्पूर्ण रूप से हानि पहुंचाता हैं।

(ii) टिड्डा सभी को नुकसान पहुंचाता हैं। मुख्यत: खरीफ की फसलों को नुकसान पहुंचाता हैं।

* महत्व:-

(i) टिड्डा सम्पूर्ण वनस्पति को खा जाता हैं।
(ii) इसके द्वारा फसलो में अत्यधिक हानि होती हैं।
(iii) किसान को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता हैं।
(iv) टिड्डे हमेशा पश्चिम - पूर्व दिशा में उड़ते हैं।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* **प्रबंधन :-**

(1) **शस्य प्रबंधन :-**

(i) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करवाये। जिससे अण्डे नष्ट हो जायें।

(ii) फ्लैम थ्रोवर एवं मशाल द्वारा जलाकर नष्ट कर दें।

(2) **जैविक प्रबंधन :-**

(i) टिलिमोनास परजीवी कीट का प्रयोग करें।

(ii) मैना, तिलियार पक्षी भी इनको खाकर नष्ट कर देते हैं।

(3) **रासा प्रबंधन :-**

(i) क्युनालफॉस व क्लोरोपायरीफॉस का प्रयोग करें

(ii) निम्फ के रास्ते में जहरीला चारा (गेहूँ की भूसी + लेड आर्सेनेट + कॉपर एसीटो आर्सेनेट) का प्रयोग करें।

[P.T.O.]

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(15) बाजरे के अर्गट रोग का रोगजनक, लक्षण एवं प्रबंधन:-

3

* रोगजनक:- क्लेविसेप्स फ्युजिफॉर्मिस (कवक)

* लक्षण:- लक्षण के आधार पर दो अवस्थाएं होती हैं। लक्षण पुष्पावस्था के समय प्रकट होते हैं।

(a) मधुबिन्दु अवस्था:-

(i) पौधे की बालियों पर गुलाबी रंग की शहद के समान द्रवीय बूंदे दिखाई देते हैं। जो सूखने पर गहरे भूरे या काले रंग की हो जाती हैं।

(ii) इस चिपचिपे पदार्थ की उप. के कारण इसे बाजरे का चेपा रोग कहते हैं।

(b) स्केलेरोशिया अवस्था:-

(i) मधुबिन्दु अवस्था के 10 दिन बाद स्कलेरोशिया प्रकट होते हैं। जो गहरे भूरे से काले रंग के होते हैं।

(ii) पौधे में बालियों में दानो के स्थान पर स्केलेरोशिया बनते हैं।

* प्रबंधन:-

(1) शस्य प्रबंधन:-

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कर बाये।

(ii) रोगग्रस्त भागो को नष्ट कर दें।

(iii) बुवाई के लिए स्वस्थ एवं प्रमाणित बीजो का प्रयोग करें।

(iv) बीजो को २०% नमक के घोल से उपचारित करें।

(v) नमक के घोल से उपचारित करने पर स्केलेरोशिया उपर तैरते हैं। जिन्हें अलग कर दें।

(2) जैविक प्रबंधन :-

(i) ट्राइकोड्रमा मित्र - फंफूद 4g/kg से बीजोपचार करें।

(ii) फ्युजेरियम सम्बुसिनम का पर्णीय छिड़काव करें।

(iii) प्रतिरोधी किस्मे :- पूसा - 23, WCC-75, ICMH 88088 की बुवाई करें।

(3) रासा. प्रबंधन :-

(i) कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (0.2%), जाइनेब (0.25%) से बीजोपचार करें।

(ii) प्रोपेकोनाजॉल, थायरम, मेंकाजेब का खड़ी फसल पर छिड़काव करें।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(16) निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी :-

3

(i) विषाणु :-

(a) विषाणु की खोज इवानोवस्की ने की थी।
(b) यह अकोशिकीय, रसायनिक कण होते हैं।
(c) विषाणु के चारो ओर प्रोटीन से बना आवरण पाया जाता हैं। जिसे केप्सीड़ कहते हैं।
(d) केप्सीड़ न्युक्लिक अम्ल की रक्षा करता हैं।
(e) वायरस का न्युक्लिक अम्ल सक्रंमणकारी होता हैं।
(f) इसमें RNA व DNA दोनो पाये जाते हैं। परन्तु दोनो एक साथ कभी नहीं पाए जाते हैं।
(g) अधिकांश पादप रोग ~~कक~~ कारक वायरस में RNA पाया जाता हैं।
(H) परिपक्व वायरस को वायरॉन कहा जाता हैं।
(I) वायरस का संक्रमण सर्वांगी होता हैं।
(J) EX!- (1) टमाटर का पर्ण कुंचन
(2) भिण्डी का पित शिरा मोजेक
(3) मूंगफली का विषाणु गुच्छा वायरस

(ii) वाइरोइड

(a) वायरस के समान ही होता हैं।
(b) आनुवांशिक पदार्थ RNA पाया जाता हैं।
(c) इसकी खोज डाइनर ने (1971) में की।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(d) सबसे छोटा पादप रोग कारक है।

(e) इससे जन्तु जनित रोग की खोज अभी तक नहीं हुई।

(f) इसमें प्रोटीन का बना आवरण नहीं पाया जाता है।

(g) आलू का तर्कुकन्द रोग होता है।

" Seaction - D "

* निबंधात्मक प्रश्न :-

(17) चयन :- पहले से उप. जीन में से उत्कृष्ट लक्षणो वाली पादपो को छांटकर उनकी संततियाँ उगाकर पौधे प्राप्त करना चयन कहलाता है।

3½

चयन के प्रकार :

(a) स्वपरागित फसलो में चयन :- इसके अन्तर्गत समूह चयन व शुद्ध वंशक्रम चयन आता है,

(b) परपरागित फसलो में चयन :- इसके अन्तर्गत

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

समूह चयन एवं आवृत्ति चयन आता हैं। आवृत्ति चयन में
(a) सरल संयोजन क्षमता के लिए चयन
(b) विशिष्ट संयोजन क्षमता के लिए चयन
(c) व्युत्क्रम आवृत्ती चयन

* **समूह चयन:** इसमें उत्तम गुणो वाली पादप संततियों को अलग कर उनके बीज मिला दिये जाते हैं। जिसे समूह चयन कहते हैं।

(1) समूह चयन परपरागित फसलो में चयन की सर्वोत्तम विधि हैं।

(2) समूह चयन में पादप किस्म विमोचित होने में 8 वर्ष का समय लगता हैं।

(3) यह विधि स्वपरागित एवं परपरागित दोनो फसलो में चयन हेतु काम में ली जाती हैं।

(4) इसमें मूल किस्म की अपेक्षा आनुवांशिक विविधता कम होती हैं।

(5) अनुकुलनशीलता कम होती हैं। शुद्धवंशक्रम चयन की अपेक्षा

(6) इसमें संततियों का परीक्षण नहीं किया जाता हैं।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(7) यह सस्ती, सुगम एवं वैज्ञानिक विधि हैं।

(8) समूह चयन विधि चयन की उत्तम विधि हैं।

(18) एस्केरिस का वैज्ञानिक नाम, बाह्य संरचना एवं आर्थिक महत्व:-

4

* वैज्ञानिक नाम:- एस्केरिस लुम्ब्रीकोइड्स

* बाह्य संरचना:-

(1) एस्केरिस संघ निमेटोड़ा का प्राणी हैं।

(2) शरीर के ऊपर क्युटिकल का आवरण पाया जाता हैं। द्विपार्श्वसममिति पायी जाती हैं।

(3) नर की लम्बाई 15-30 cm. एवं चौड़ाई 3-5 m.m. ~~होती~~ होती हैं।

(4) मादा की लम्बाई 20-40 cm. एवं चौड़ाई 4-6 m.m. होती हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(5) इस जीव के शरीर पर चार धारियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। एक पट्टी अधर सतह पर, एक पृष्ठ में एवं दो पार्श्व में होती हैं।

(6) नर में स्पिक्युलस पाये जाते हैं। जबकि मादा में पीतक ग्रंथियाँ पायी जाती हैं।

(7) नर में अवस्कर छिद्र होता हैं। जबकि मादा में गुदा होती हैं। कूटगुहिय जन्तु हैं।

(8) नर में प्रकुटीन नामक संरचना पायी जाती हैं। जो मैथुन के समय मादा को पकड़ने में सहायता करती हैं।

(9) नर मादा की अपेक्षा छोटा होता हैं।

(10) नर का पुच्छीय सिरा घूमा हुआ एवं मादा का सीधा होता हैं।

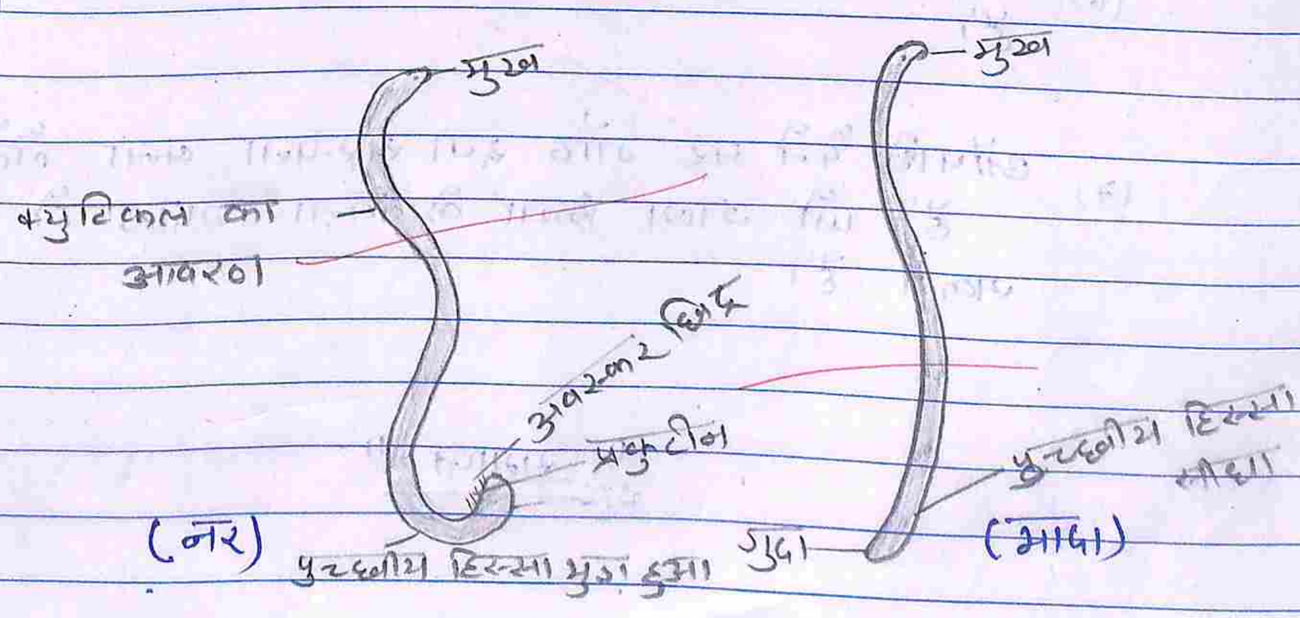

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

* आर्थिक महत्व :-

(1) इसका प्रयोग प्रारंभिक निषेचन, समसूत्री विभाजन हेतु किया जाता हैं।

(2) ऐस्केरिस द्वारा एस्केरियोसिस रोग प्रमुखता से होता हैं।

(3) यह अण्डो से सक्रमित दूषित जल एवं भोजन से होता हैं।

(4) यह आंत्र की उपकला को भेदकर वृक्क एवं हड्डियों को गंभीर नुकसान पहुंचाता हैं।

(5) उग्र संक्रमण में इयोसिनियाफिला एवं श्वेताणु रोग हो जाता हैं।

(6) यह व्यस्क की अपेक्षा बच्चो में अधिक होता हैं।

(7) औषधि देने पर गाँठ रूपी संरचना बना लेते हैं। जो शल्य क्रिया के बिना घातक हो सकती हैं।

" समाप्त "

BSER-18U/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

55½ = 56

fifty six

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026